पाठ – 7.4

गोधूलि

हेक्टर ह्यू मुनरो 'साकी' (1870–1916)

जीवन परिचय

साकी का जन्म 18 जनवरी, 1870 में बर्मा में हुआ। स्कॉटिश परिवार के हेक्टर साकी प्रारंभ में पत्रकार थे। वे कई वर्षो तक विदेश संवाददाता के रूप में काम करते रहे। 1908 से वे लंदन में बस गए। उनकी कहानियों में तत्कालीन समाज पर तीखा व्यंग्य निहित है। उनकी रचनाएँ अपने प्लॉट और झटकेदार अंत के लिए जानी जाती हैं। साकी का निधन 1916 में फ्रांस में हुआ।

नार्मन गॉर्टस्बी पार्क में एक बेंच पर बैठा हुआ था। उसके दाहिनी ओर शोर–शराबे से भरा हाइड पार्क स्थित था। मार्च का महीना, गोधूलि की बेला थी। सड़क पर अधिक लोग नहीं थे, फिर भी कई लोग विभिन्न मनःस्थितियों में इधर से उधर, एक बेंच से दूसरी तक घूमते नजर आ रहे थे।

गॉर्टस्बी को यह दृश्य पसंद आया, उसकी मौजूदा मनःस्थिति से वह मेल खाता था। गोधूलि, उसके अनुसार पराजय की घड़ी थी, जब पराजित तथा निराश स्त्री–पुरुष अपने को लोगों की नजरों से छिपा कर यहाँ आ बैठते थे। ऐसी घड़ी में उनके हाव–भाव, वेश–भूषा में कोई कृत्रिमता नहीं होती थी। उलटे वे उनकी ओर से उदासीन रहते थे, क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि उस मनःस्थिति में लोग उन्हें पहचान पाएँ। वहाँ बैठा–बैठा गॉर्टस्बी भी अपने को पराजित लोगों में मानने लगा। उसे धनाभाव नहीं था और यदि वह चाहता, तो अपने को समृद्धिशाली वर्ग में गिनवा सकता था। उसे तो पराजय का अनुभव हुआ था, अपनी किसी महत्वाकांक्षा को लेकर।

बेंच पर उसके बगल में ही एक वृद्ध बैठा था। उसके कपड़े–लत्ते विशेष अच्छे नहीं थे। फिर वह उठा और थोड़ी देर में आँखों से ओझल हो गया। अब उसकी जगह आकर बैठा एक युवक, जिसकी वेश–भूषा तो अच्छी थी, किन्तु जिसके चेहरे पर पहले वाले वृद्ध व्यक्ति की तरह ही खिन्नता तथा रुष्टता झलक रही थी।

– आप बहुत अच्छे मूड में नहीं लगते! गॉर्टस्बी ने उससे कहा। युवक ने बिना झिझक उसकी ओर ऐसे देखा कि वह संभल गया।

– आपका मूड भी अच्छा हरगिज नहीं होता, अगर आप मेरी तरह असहाय बन गए होते। मैंने अपनी जिन्दगी की सबसे बड़ी मूर्खता कर डाली है।

– ऐसा? गॉर्टस्बी ने उदासीनता से कहा।

– इस दोपहर में वर्कशायर स्क्वायर के पैंटागोनियन होटल में ठहरने के ख्याल से आया था। वहाँ पहुँचा, तो क्या देखता हूँ कि उसकी जगह पर एक थियेटर खड़ा है। टैक्सी ड्राइवर ने कुछ दूर पर एक दूसरे होटल की सिफारिश की। वहाँ पहुँच कर मैने घर पर होटल का पता देते हुए एक पत्र लिखा और साबुन की एक टिकिया खरीदने के विचार से निकला। साबुन साथ लाना मैं भूल गया था और होटल का साबुन इस्तेमाल में लाना मुझे पसंद नहीं। साबुन खरीद कर जब होटल लौटने को हुआ, तो सहसा खयाल आया कि न तो मुझे होटल का नाम याद है और न ही उस सड़क का, जिस पर वह स्थित है। मैं एक शिलिंग लेकर बाहर निकला था और साबुन की टिकिया खरीदने के बाद एक ही पेंस मेरे पास रह गया है। अब मैं रात को कहाँ जा सकता हूँ।

यह कहानी सुनाई जाने के बाद निस्तब्धता छाई रही।

– शायद आप सोच रहे हैं कि मैंने एक अनहोनी बात आपसे कह सुनाई है! युवक ने कुछ झुँझलाहट भरे स्वर में कहा।

– बिलकुल असंभव तो नही! गॉर्टस्बी ने दार्शनिक ढंग से कहा'– मुझे याद है कि कुछ वर्ष पहले एक विदेशी राजधानी में मैंने भी ऐसा ही किया था।

अब युवक उत्साहित होकर बोला– विदेशी नगर में यह परेशानी नहीं। यहाँ अपने ही देश में ऐसा हो जाने पर बात बिल्कुल भिन्न हो जाती है। जब तक कोई ऐसा भद्र व्यक्ति नहीं मिल जाता, जो मेरी आपबीती को सत्य

समझ कर मुझे कुछ रकम कर्ज के तौर पर दे, तब तक मुझे रात खुले आकाश में गुजारनी पड़ेगी। मुझे खुशी है कि आप मेरी आपबीती को सफेद झूठ नहीं मान रहे हैं।

– बात तो ठीक है, किन्तु आपकी कहानी का सबसे कमजोर मुद्दा यह है कि आप वह साबुन की टिकिया नहीं पेश कर सकते।

युवक जल्दी से आगे को सरक कर बैठ गया, जल्दी–जल्दी उसने जेबें टटोलीं और फुसफसाया–मैंने उसे खो दिया लगता है।

– होटल और साबुन की टिकिया, दोनों को एक ही अपराह्न में खो देना तो लापरवाही का ही सूचक माना जाएगा। किन्तु वह युवक उसकी अंतिम बात सुनने के लिए रुका नहीं।

बेचारा! गॉर्टस्बी ने सोचा, सारी कहानी में अपने लिए साबुन की टिकिया लेने जाना ही सच्चाई को प्रकट करने वाली एकमात्र बात थी और उसी ने बेचारे को दुखी कर दिया।

इन विचारों के साथ वहाँ से जाने के लिए गॉर्टस्बी उठा ही था कि ठिठक कर रह गया। क्या देखता है कि बेंच के बगल में नए रैपर में लिपटी हुई कोई वस्तु जमीन पर पड़ी है। वह वस्तु साबुन की टिकिया है, उसने सोचा। युवक की खोज में वह तेजी से लपका। अभी वह कुछ ही दूर चल पाया होगा कि उसने उस युवक को एक स्थान पर विमूढ़ावस्था में खड़ा पाया।

– आपकी कहानी का महत्वपूर्ण गवाह मिल गया है। गॉर्टस्बी ने रेपर में लिपटी टिकिया उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा– आप मुझे मेरे अविश्वास के लिए क्षमा करें। यदि एक गिनी से आपका काम चल सके, तो.....

युवक ने उसके द्वारा बढ़ाई गई गिनी को जेब में रखते हुए उसके संदेह को तत्काल दूर कर दिया।

'यह लीजिए मेरा कार्ड, पते के साथ'। इस सप्ताह में किसी भी दिन मेरा कर्ज आप लौटा सकते हैं। हाँ यह टिकिया भी लीजिए।

'भाग्यवश ही यह आपको मिल पाई!' कहने के साथ ही युवक नाइट ब्रिज की दिशा में तेजी से लुप्त हो गया।

'बेचारा!' गॉर्टस्बी ने सोचा।

अभी वापस लौटकर वह अपनी बेंच पर, जहाँ उपरोक्त नाटक घटित हुआ था, बैठने ही वाला था कि उसने एक वृद्ध को बेंच के चारों ओर झुककर कुछ तलाश करते पाया। उसने यह जान लिया कि वह वही वृद्ध था, जो कुछ देर पहले उस बेंच का सहभागी था।

क्या आपका कुछ खो गया है? उसने सहानुभूतिपूर्वक पूछा।

हाँ, साबुन की एक टिकिया।

अभ्यास

पाठ से

1. युवक की बात पर गार्टस्बी को विश्वास क्यों नहीं हुआ?
2. गॉर्टस्बी को कैसे विश्वास हुआ कि युवक सच बोल रहा है?
3. कहानी सुनाए जाने के बाद निस्तब्धता क्यों छा गई?
4. साबुन की टिकिया वास्तव में किसकी थी? और क्यों?
5. कहानी में से वे बिन्दु छाँट कर लिखिए जहाँ पर परिस्थिति बदलती है।

पाठ से आगे

1. गॉर्टस्बी को एक दृश्य पसंद आया। उसका वर्णन कहानी में मिलता है। आपको भी कई बार कुछ दृश्य पसंद आए होंगे। उनमें से किसी एक दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. कहानी के घटनाक्रम में स्थिति कई बार बदलती है। ऐसा जीवन में भी होता है। आप भी ऐसा कोई उदाहरण लिखिए।